कलर और कैरेक्टर का सुंदर कॉम्बिनेशन

कई बार लोग अपने घरों के डेकोरेशन को लेकर काफी सीरियस होते हैं। वे चाहते हैं कि जब भी कोई मेहमान उनके घर आए तो उनके घर का इंटीरियर देखकर दंग रह जाए। ऐसे में लोग घरों को सजाने को लेकर कई प्रयोग करते हैं, लेकिन घर को ठंड में ज्यादा देखभाल की जरूरत होती है, तो आइए आज हम आपको बताते हैं ठंड के मौसम में घर किस तरह से सजाएं।

कलात्मकता...

कूल सीजन में कलर और कैरेक्टर को मिलाकर सुंदर सजावट का कांबिनेशन बनाएं और देखिए कि रंग व आकृतियों का मिश्रण किस तरह कमरे की खूबसूरती को बढ़ा देता है वो भी तब जब आपकी कल्पनाशीलता उसे और अधिक निखार दें। इस मौसम में चटख रंग अच्छे लगते हैं। रंगों के साथ फैब्रिक्स व टेक्सटाइल्स का उपयोग सजावटी चीजों के साथ कमरे के बैकग्राउंड को और भी निखार देता है। कलात्मक तरीके से लगाई गई मूर्तिनुमा आकार के लैंप, डेलिकेट फानूस इंटीरियर की स्टाइल को सुंदर बनाते हैं।

ग्लास के प्रयोग से नया लुक

कमरे में विभिन्न कोणों से आने वाले प्रकाश के लिए जरूरी है कि कमरे के आकार, साइज, स्टाइल और रंगों का विशेष ध्यान रखा जाए तथा उसी के अनुसार कमरे की हर चीज की फिटिंग व प्रेजेंटेशन हो। इस मौसम में मोटे पर्दे ठंड से बचाव करते हैं। बहुत अधिक फंक्शनल फिटिंग कमरे की डिजाइन को प्रभावित करती है, खासकर बाथरूम व किचन की। छोटी-बड़ी चीजों का मॉर्डन या हाईटेक या क्लासिक तरीके से किया गया डिजाइन घर को इस मौसम में विशेष खूबसूरती प्रदान करता है। सिंक या किचन में टाइल्स, मार्बल्स या ग्लास का उपयोग भी एक नया लुक देती है।

टीवी भी आपको देख रहा है...

घर में टीवी देखते हुए इंसान शायद ही सोचता है कि कोई उसे देख रहा है, लेकिन ड्राइंग रूम में स्मार्ट टीवी के आने के बाद ऐसा नहीं रहा। आधुनिक स्मार्ट टीवी डाटा तो रिसीव करते ही हैं, डाटा भेजते भी हैं। इसके गंभीर नतीजे हो सकते हैं। लोग इस खतरे को समझ नहीं रहे। चैनल इस तरह हमारे टीवी देखने की आदत का प्रोफाइल बना सकते हैं। आईटी एक्सपर्ट बताते हैं कि इसका सीधा असर आपकी जिंदगी पर होता है।

स्मार्ट टीवी के यूजर इसे आम टीवी जैसा सोचते हैं जो बहुत ज्यादा कुछ नहीं करता, लेकिन स्मार्ट टीवी एक सक्रिय मशीन हैं, जो वह सब सुनती और देखती है, जो आप टीवी में देखते हैं या इंटरनेट पर करते हैं। बड़ा खतरा यह है कि लोग इसके प्रति संवेदनशील नहीं हैं। उनकी निगरानी हो रही है, लेकिन उन्हें पता ही नहीं है। हर बार जब हम स्मार्ट टीवी को ऑन करते हैं या चैनल चेंज करते हैं, तो टीवी सेट उस चैनल की वेबसाइट को रिक्वेस्ट भेजता है। वहां से एक डाटा सुरक्षा गाइडलाइन मिलती है, जिसका काम इस बात का ध्यान दिलाना है कि चैनल अब डाटा कलेक्ट कर रहा है।

यह सूचना अक्सर छुपी हुई होती है। यूं भी डाटा कलेक्शन को रोका नहीं जा सकता, लेकिन इस डाटा का इस्तेमाल जिस तरह से हो सकता है, वह अपने आप में दिलचस्प है। आईटी एक्सपर्ट बताते हैं कि इसका सीधा असर आपकी जिंदगी पर होता है। इस निगरानी का इस्तेमाल आपके अनुरूप विज्ञापन दिखाने के लिए हो सकता है। यह भी हो सकता है कि आपके मेडिकल इंश्योरेंस की फीस बढ़ा दी जाए क्योंकि आप बहुत ज्यादा टेलिविजन देखते हैं। चैनल इस तरह हमारे टीवी देखने की आदत का प्रोफाइल बना सकते हैं। यदि एक से ज्यादा लोग एक ही टेलिविजन सेट का इस्तेमाल करते हैं, तो इससे समस्या हो सकती है। पर्सनलाइज्ड विज्ञापन इस तरह के हो सकते हैं कि यदि आप रात में क्राइम फिल्में देखते हैं, तो दिन में आपके बच्चों को खास तरह के हथियारों का विज्ञापन दिखाया जाएगा।

निजता पर हमला

हम डाटा के जो निशान छोड़ते हैं, अब उनकी मदद से आजकल पर्सनैलिटी प्रोफाइल बनाए जा सकते हैं। आईटी एक्सपर्ट के मुताबिक हमारे डाटा से काफी कुछ जाहिर हो जाता है। इस बात का पता किया जा सकता है कि आपका व्यक्तित्व कैसा है, क्या आप भावुक हैं या फिर खुले मिजाज वाले। यानी पर्सनैलिटी के जो पांच प्रमुख लक्षण होते हैं, जिनसे मनोविज्ञान में व्यक्तित्व का मानक तय किया जाता है, उन सब पर नजर रखी जा सकती है। हीटिंग थर्मोस्टैट, कैमरा, फिटनेस आर्मबैंड जैसे घरेलू इंटेलिजेंट गैजेट भी इंटरनेट के जरिए पर्सनल डाटा भेजते हैं। डाटा सुरक्षा कार्यकर्ताओं की मांग है कि कंपनियों को डाटा ट्रांसफर सिस्टम को पारदर्शी बनाना चाहिए और यूजर से उनके डाटा के इस्तेमाल की अनुमति लेनी चाहिए। डाटा सुरक्षा भरोसे का महत्वपूर्ण कारक है। यदि आप कारोबार करना चाहते हैं तो आपको ग्राहकों में भरोसा जगाना होगा। डाटा सुरक्षा के बिना यह पैदा नहीं होगा और भरोसे के बिना कारोबार नहीं चलेगा।

तो क्या स्मार्ट टीवी नहीं खरीदें?

जी नहीं, स्मार्ट टीवी जरूर खरीदें और यदि नहीं भी खरीदना चाहें तो क्रोमकास्ट जैसे डांगल से अपने टीवी को स्मार्ट अवश्य बनाएं। आखिर दुनिया स्मार्ट हो रही है तो आपका टीवी क्यों नहीं? हां, कुछ उपायों से आप इस तरह की समस्याओं से बच सकते हैं और अपने स्मार्ट टीवी का भरपूर उपयोग स्मार्ट तरीके से कर सकते हैं। स्मार्ट टीवी में दो प्रमुख बातें हो सकती हैं। आपकी जिंदगी आसान बनाने के लिए और आवाज और हावभाव से टीवी कंट्रोल करने व स्काइप जैसी सेवाओं से वीडियो टेलीफोनी का बेहतर इस्तेमाल करने के लिए इसमें अंतर्निर्मित कैमरा तथा आवाज पहचानने हेतु रिमोट में माइक्रोफोन होता है। जब आप स्काइप जैसी सेवा चालू करते हैं तो यह स्वचालित सक्रिय हो जाते हैं। इसी प्रकार यदि आप टीवी को आवाज या हावभाव से नियंत्रित करने हेतु तैयार कर देते हैं तो इसका कैमरा तथा आवाज पहचानने वाला माइक्रोफोन चालू हो जाता है और आपके हावभाव तथा आवाज को पहचान कर टीवी के फंक्शनों को नियंत्रित करता है। कुछ स्मार्ट टीवी के माइक्रोफोन हमेशा सुनने वाले मोड में होते हैं और जैसे ही आप कुछ पूर्व निर्धारित शब्द कहते हैं तो यह आपकी आवाज को रिकॉर्ड करने लगते हैं कि आप आखिर क्या कहना या करना चाह रहे हैं और यदि आप कहेंगे हाय टीवी स्टार्ट तो आपका टीवी चालू हो जाएगा, और आप कहेंगे हाय टीवी शट डाउन तो यह बंद हो जाएगा। आमतौर पर, सामान्य उपयोग हेतु ये सेवाएं सुरक्षित, समस्या रहित मानी जाती हैं।

तो फिर समस्या कहां है?

समस्या वहां आ सकती है, जब आपका स्मार्ट टीवी आपकी आवाज को ठीक से पहचानने के लिए आपकी आवाज को रेकॉर्ड कर रीयल टाइम में अपने क्लाउड सर्वरों अथवा किन्हीं तृतीय पक्ष की सेवा पाने के लिए (जैसे कि स्पीच रिकग्नीशन अथवा स्पीच टू टैक्स्ट / टैक्स्ट ट्रांसलेटर सेवा आदि के लिए) उनके क्लाउड सर्वरों पर अपलोड करता है। आमतौर पर सभी स्मार्ट टीवी यह करते हैं। स्थानीय रूप से ऑफलाइन में आमतौर पर यह कार्य नहीं होता क्योंकि आपका स्मार्ट टीवी और उसमें रखा डेटाबेस इतना सक्षम नहीं होता और इस कार्य के लिए प्रायः ऑनलाइन डेटा और वृहद सक्षम तंत्र की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, आप अपने स्मार्ट टीवी में अपनी आवाज का उपयोग करते हुए कोई खोज कर रहे हैं लेकिन इस बीच आप कुछ आपसी वार्तालाप भी कर लेते हैं तो वह सारा कुछ रेकॉर्ड हो जाएगा और आपके स्मार्ट टीवी से संबद्ध सर्वरों पर पहचानने के लिए भेज दिया जाएगा, जो कि आप कतई नहीं चाहेंगे। ऊपर से, चूंकि आपका स्मार्ट टीवी इंटरनेट से कनेक्टेड व ऑनलाइन होता है तो उसमें भी हैकिंग से नियंत्रण प्राप्त कर उसके बेजा उपयोग के खतरे वैसे भी हैं।

समस्या से कैसे निपटें?

अपने स्मार्ट टीवी को चलाते समय थोड़ी स्मार्टनेस दिखाएं। यदि अपने स्मार्ट टीवी का उपयोग ऑनलाइन नहीं कर रहे हों तो भले ही थोड़ा झंझट भरा हो, इसका नेट कनेक्शन बंद कर रखें। स्मार्ट टीवी का कैमरा यदि उपयोग में न आ रहा हो तो उसे बंद कर रखें। स्मार्ट टीवी की सेटिंग में मोशन रिकग्नीशन बंद कर रखें। टीवी पर माइक्रोफोन का चिह्न दिखाई दे रहा हो तो यह मान लें कि आपका स्मार्ट टीवी आसपास हो रही तमाम आवाजों को रेकॉर्ड कर रहा है। ऐसे में सावधानी बरतें तथा कार्य समाप्त हो जाने के बाद माइक्रोफोन बंद कर दें। आवाज नियंत्रण सुविधा का इस्तेमाल न करें या करें तो ध्यान रखें कि उस वक्त दूसरे किस्म के वार्तालाप न करें।

अब एक नई रणनीति

आप सोचिए कि आपके बॉस को यह डाटा मिल जाए। नौकरी के लिए आवेदन देने वालों को इस तरह की पर्सनैलिटी प्रोफाइल के आधार पर नौकरी मिल सकती है, या उनके आवेदन को ठुकराया जा सकता है या फिर कंपनियां इसके आधार पर लोगों का भविष्य तय करेंगी। आईटी को सुरक्षित बनाने पर काम कर रहे वैज्ञानिक इसके खिलाफ एक नई रणनीति बना रहे हैं। इसके केंद्र में यह बात है कि हर कोई खुद तय करेगा कि वह अपना डाटा देना चाहता है या नहीं। रिसर्चरों ने एक डाटा सेफ्टी बॉक्स डेवलप किया है, जो यूजर को अपने डाटा का मालिक बनाता है। स्मार्ट टीवी के पीछे लगा छोटा सा कंप्यूटर बॉक्स, टीवी में आने जाने वाले डाटा पर नजर रखता है और जैसे ही कोई क्रिटिकल डाटा फ्लो दिखता है, तो मॉनिटर पर अलार्म भेज देता है। जैसे ही आप डाटा सेफ्टी बॉक्स का संदेश देखते हैं, अपने रिमोट कंट्रोल पर ग्रीन बटन दबाकर फैसला कर सकते हैं कि चैनल को आपका डाटा मिलना चाहिए या नहीं। अगर आप बटन नहीं दबाते हैं, तो चैनल को आपका डाटा नहीं मिलेगा।

आपका सबसे ज्यादा इस्तेमाल कर रहा फेसबुक...

आम लोगों के बारे में फेसबुक जितनी जानकारी इकठ्ठा करता है कोई सोशल नेटवर्क नहीं करता। फेसबुक 98 तरह की जानकारी इकठ्ठा करके उसी के हिसाब से ऑनलाइन विज्ञापन दिखाता है। फेसबुक आपकी लोकेशन, आपकी आय, आपकी पसंद-नापसंद, आपकी मौजूदा जरूरत, आपके पिछले सर्च, आपके निकटतम मित्रों से हुई आपकी बातचीत के कीवर्ड्स सब जानता है। इन सबसे मिलकर आपकी प्रोफाइल बनती है और उसके बाद विज्ञापन देने वाली कंपनी तय करती है कि उसे किस तरह की प्रोफाइल वाले लोगों तक पहुंचना है। जब भी आप फेसबुक पर लॉग इन होते हैं, ज्यादातर लोग तो कभी लाग आउट करते ही नहीं, तो फेसबुक को यह पता चलता रहता है कि इस वक्त आपकी ऑनलाइन गतिविधियां क्या हैं, आप किस साइट पर हैं वगैरह। यहां तक कि लॉग ऑफ करने के बाद भी फेसबुक के पास आपके बारे में काफी जानकारी पहुंचती रहती है। हर बार जब आप कोई पेज लाइक या शेयर करते हैं तो उसके बारे में फेसबुक के पास पूरी जानकारी तो होती ही है। अब बहुत सारी ऑनलाइन कंपनियां आपको फेसबुक लॉग इन का इस्तेमाल करने के लिए कहती हैं, यानी उस साइट या ऐप पर आप जो भी करेंगे वो फेसबुक को मालूम होगा।

facebook

आपका पूरा हिसाब

फेसबुक इस बात का पूरा हिसाब रखता है कि आपकी पसंद-नापसंद, जीवनशैली, आदतें और जरूरतें क्या हैं, उसी हिसाब से वह टार्गेटेड विज्ञापन करके मोटी कमाई करता है। हर बार जब आप लॉग इन करके थोड़ा समय फेसबुक पर बिताते हैं तो उसकी कमाई कुछ बढ़ जाती है। फेसबुक के सभी सब्सक्राइबर अपने बारे में जानकारी खुद ही देते रहते हैं। लोग उसकी वेबसाइट को फ्री एक्सेस करके उस पर तरह-तरह की जानकारी जैसे ईमेल, मोबाइल फोन नंबर, शहर के अलावा कई और भी जानकारी देते हैं। यह ऐसी जानकारी होती है जैसे जन्मदिन, शादी की सालगिरह, बच्चों के नाम - जो ग्राहकों के बारे में मिलना आसान नहीं है और जब लाखों लोगों के बारे में यह जानकारी मिल सकती है तो उसके लिए एक कीमत चुकाने में कंपनियां नहीं हिचकती हैं। लोकेशन के बारे में जानकारी देकर लोग फेसबुक को यह भी बताते हैं कि वो साल में कितनी बार छुट्टियां मनाने जाते हैं, कितनी बार घर से बाहर खाना खाते हैं या पिक्चर देखने जाते हैं। बियर के गिलास के साथ आप अपनी तस्वीर शेयर करेंगे तो आपको पबों और बारों के विज्ञापन दिखाई देने लगेंगे जो शराब नहीं पीता उसको ऐसे ऐड दिखाकर क्या फायदा? अगर आपने अपनी नई कार की तस्वीर शेयर की है और आपकी लोकेशन भी मालूम है, मिसाल के तौर पर आपके शहर में महंगी कार चलाने वाले लोगों के समूह को ही महंगे सामान का विज्ञापन दिखाया जाए, ऐसे फैसले करना काफी आसान हो जाता है। मिसाल के तौर पर चॉकलेट बनाने वाली कंपनियां तय कर सकती हैं कि सिर्फ टीनएजर लड़कियों को ही अपने विज्ञापन दिखाने हैं लेकिन अगर कोई फिटनेस ट्रैकर जैसे प्रोडक्ट बेच रहा है तो 30 साल के ऊपर लोगों तक भी पहुंचना चाहेगा। ऐसे लोग जब अपने फेसबुक पेज पर लॉग इन करेंगे तो उन्हें वो विज्ञापन ही दिखाई देंगे। ये सभी कंपनियां फेसबुक को इसके लिए भरपूर पैसे देती हैं क्योंकि टीवी या प्रिंट के विज्ञापन इतने निशाने पर नहीं लगते। सब्सक्राइबर को उनके जन्मदिन पर फेसबुक पेज पर कंपनियों की तरफ से बधाई संदेश भी भेजा जा सकता है क्योंकि ये जानकारी लोग खुद ही फेसबुक को देते हैं। गूगल पर अगर आप खरीदने के लिए घड़ियां ढूंढ रहे हैं तो फेसबुक पर भी उसके विज्ञापन दिखाई देने लगते हैं, ऐसा संयोगवश नहीं, बल्कि रणनीति के तहत होता है।

आपसे क्या चाहता है फेसबुक

ऐसा नहीं है कि फेसबुक के बारे में सब कुछ बढ़िया चल रहा है। जो औसत समय लोग फेसबुक पर बिताते हैं वो कम हो रहा है, जो विज्ञापन देने वाली कंपनियों के लिए बुरी खबर है। अगर यह ट्रेंड जारी रहा तो वो फेसबुक के लिए चिंता की बात हो सकती है इसीलिए फेसबुक चाहता है कि आप उसकी वेबसाइट से लॉग आउट न करें ताकि आपका स्टेटस हमेशा लॉग इन वाला रहे। ऐसे में कंपनियों को लगेगा कि आप ज्यादा समय फेसबुक पर बिता रहे हैं। स्मार्टफोन पर विज्ञापनों से कमाई में फेसबुक, ट्विटर के मुकाबले काफी आगे निकल गया है और अब गूगल के अलावा दूसरी कोई भी कंपनी उसे टक्कर देने में सक्षम नहीं दिखाई दे रही है।

जल्द अपडेट करें आईफोन...

एक मालवेयर के चलते एप्पल ने इम्पोर्टेन्ट सिक्योरिटी अपडेट पेश किया है और अगर आपने अपने आईफोन को अपडेट नहीं किया है तो आप इसे जल्द से जल्द अपडेट कर लें। यह मालवेयर टैक्स्ट मैसेज, ई-मेल आदि को पढ़ सकता है और कॉल रिकार्ड (व्हाट्सएप और वाइबर कॉल्स) कर सकता है। इसके साथ ही लोकेशन और आपके फोन के कैमरा और माइक्रोफोन को एक्टिवेट कर सकता है। इसलिए अपने आईफोन को 9.3.5 पर अपडेट कर लें। अगर यह मालवेयर आपके आईफोन में आ गया तो हैकर के पास आपके फोन का सारा कंट्रोल होगा। इसका नाम ट्रीडेंट है और मोबाइल सिक्योरिटी फर्म लुकआउट ने इसके बारे में जानकारी दी है। आईओएस 9 में यह एप्पल के सिक्योर प्लेटफार्म को ब्रैक कर सकता है। यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो सिटीजन लैब के मुताबिक ट्रीडेंट एक स्पाइवेयर प्रोडक्ट है जिसे ईजराइल आधारित साइबर वार कम्पनी एनएसओ ग्रुप द्वारा बनाया गया है। आईफोन को अपडेट करने के लिए फोन की सैटिंग्स › जनरल › अबाऊट › वर्जन में जाकर आईओएस वर्जन को चैक करें और नए वर्जन को अपेडट कर लें।

गूगल का खास फीचर...

गूगल जल्द ही अपने वाई-फाई असिस्टेंट फीचर को नैक्सस फोन्स के लिए रोल आउट करने जा रही है। इस वाई-फाई असिस्टेंट फीचर की मदद के साथ यूजर्स रेंज में आने वाले कई मिलियनज ओपन और फ्री वाई-फाई होटसपोटस को सुरक्षित तरीको के साथ कुनैकट कर सकेंगे। इस का प्रयोग करने के लिए यूजर्स को एंड्रायड सेटिंग में जाकर गूगल पर टेप करना होगा। इस के बाद नैटवर्किंग को सेलेक्ट कर आप फीचर को स्विच कर सकते हो जिस में टर्न ऑन और टर्न आफ की आप्शन दी होगी। एक बार स्विच ऑन करने पर डिवाइस के उपर वाले कोने में एक की-आइकन दिखाई देगा। यह आइकन आपको एक फ्री वाई-फाई नैटवर्क के एक कनैक्शन की सूचना देगा। फिलहाल वाई-फाई असिस्टेंट फीचर सबसे पहले यूएस, कैनेडा, मैक्सिको, द यूके और नोरडिक देशों के नैक्सस फोन्स के लिए रोलआउट किया जा जाएगा।

घोस्ट हंटिंग गैजेट्स...

भूत है या नहीं यह सदियों से बहस का मुद्दा है। कोई कुछ भी कहे, हमारे समाज में इन पर विश्वास और अविश्वास की कई कहानियां हैं। रहस्य और रोमांच के इस खेल को समझने के लिए, उन पर रिसर्च के लिए कई पैरानॉर्मल संस्थाएं काम भी काम कर रही हैं। खास बात यह है कि पुराने जमाने की तरह यह इंस्ट्रीट्यूट किसी ओझा या तांत्रिक के भरोसे आगे नहीं बढ़ रहे हैं बल्कि इनकी खोज का आधार हैं अत्याधुनिक गैजेट्स।

भारत में करीब 10 मान्यता प्राप्त पैरानॉर्मल सोसायटीज हैं, जो भूतों से बात करने और उनके रहस्य सुलझाने का दावा करती हैं। कुछ खास वैज्ञानिक उपकरणों की मदद से इनके सदस्य भूतिया स्थानों की आर्द्रता और नमी का पता लगाकर, वहां हो रही पारलौकिक गतिविधियों को कैमरे और ऑडियो में कैद कर लेते हैं।

ऐसे ही गैजेट्स और उपकरणों की मदद से 'टीम पेनटेकल' ने हाल ही में गोवा के जंगलों में कुछ भूतिया आवाजों को सुना और उन पैरालॉकिक ताकतों को रिकॉर्ड भी किया है। हम आपकों बताएंगे कुछ ऐसे ही गैजेट्स के बारे में, जो पैरानॉर्मल सोसायटीज के सदस्यों द्वारा भूत-प्रेत और आत्माओं का पता लगाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

डिजिटल रिकॉर्डर

डिजिटल रिकॉर्डर का छोटा नाम ईवीपी है। पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर इसे ऐसी जगहों पर रहस्यमयी आवाजें सुनने के लिए इस्तेमाल करते हैं। कई इन्वेस्टिगेटर्स का मानना है कि इस डिजिटल रिकॉर्डर की आवाज से आत्माओं को फॉलो किया जा सकता है।

मोशन डिटेक्टर

साधारण आंखों से न देखी जा सकने वाली आकृतियों को देखने के लिए कुछ घोस्ट इन्वेस्टिगेटर्स मोशन डिटेक्टर या मोशन सेंसर का इस्तेमाल करते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस उपकरण से ऐसी शक्तियों का आसानी से पता चल जाता है। मोशन सेंसर्स बहुत सेंसिटिव मूवमेंट्स को भी आसानी से ट्रैक कर लेते हैं।

इलेक्ट्रोमैग्नेटिव फोर्स मीटर

इलेक्ट्रोमैग्नेटिव फोर्स मीटर इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड और आत्माओं की एक्टिविटी का पता करती करती है। पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर्स का कहना है कि पारलौकिक शक्तियों में मैग्नेटिक फील्ड को बदलने की ताकत होती है और मैग्नेटिक फील्ड के बदलते ही ईएमएफ मीटर इसे ट्रैक कर लेता है।

कंपास या डाउजिंग रॉड्स

कंपास एक प्राकृतिक ईएमएफ की तरह काम करता है। आसपास अगर कोई आत्मा या पारलौकिक शक्ति हो, तो वह उसी दिशा में मुड़ जाता है।

घोस्ट बॉक्स

घोस्ट बॉक्स या फ्रैंक बॉक्स एक तरह का पोर्टेबल रेडियो है, जिसमें एफ और एमएम बैंड भी कनेक्ट होता है। माना जाता है कि कई रहस्यमयी ताकतें ऑडियो संकेतों की मदद से अपना संदेश देती हैं। इस डिवाइस को डिजिटल रिकॉर्डर की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है।

मिस्टर घोस्ट

मिस्टर घोस्ट एक ईएमएफ डिटेक्टर है। इसे स्मार्टफोन के हेडफोन जैक से कनेक्ट घर में पारलौकिक गतिविधि का पता लगाया जा सकता है। दरअसल, यह एक ऐसी डिवाइस है, जो एप्प की मदद से रेडिएशन मापती है। इसे यूज करने के लिए स्मार्टफोन पर 'मिस्टर घोस्ट' नाम का एप्प डाउनलोड करना होता है । ईएमएफ डिटेक्टर को फोन से कनेक्ट करके उस दिशा में इंगित करना होता है, जहां से भूतिया गतिविधि होने की शंका हो। ऐप की मदद से यह डिवाइस उस जगह से आ रही रेडिएशन बता देगी।

लेजर ग्रिड

यह एक तरह की लेजर डिवाइस है, जिसमें आसपास आत्मा या शक्ति होने पर लेजर बीम जलने लगती है। घोस्ट इन्वेस्टिगेशन में इसे सबसे ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। इसके साथ ही कैमरा और कैम-कॉर्डर भी लगाया जाता है। बाजार में तरह-तरह के फीचर्स वाले कई लेजर ग्रिड उपलब्ध हैं।

इन्फ्रारेड थर्मोमीटर

इन्फ्रारेड थर्मोमीटर को थर्मल स्कैनर के नाम से भी जाना जाता है। जब कोई शक्ति नजदीक होती है, तो इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड और तापमान में भी जरा-सा अंतर आ जाता है। इन दोनों चीजों को मापने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता हैं। माना जाता है कि ऐसी शक्तियां जहां होती है वहां ठंड ज्यादा रहती है। अगर तापमान 10 डिग्री के नीचे चला जाए, तो यह किसी शक्ति के होने का अहसास बताता है। घोस्ट इन्वेस्टिगेटर्स सभी भूतिया जगहों पर इसे जरूर लेकर जाते हैं। अन्य कई उपकरणों के साथ इसकी रीडिंग को भी काफी प्रमुखता दी जाती है।

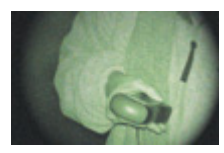

सक्सैस के लिए परफेक्शन-पैशन जरुरी

तेजी से बदलते जमाने और टेक्नोलॉजी के इस दौर में अपनी जगह व पहचान बनाने के लिए अपनी पसंद के क्षेत्र में पैशन होना बेहद जरूरी है, तभी आप परफेक्शन के साथ अपने टास्क पूरे करते हुए कामयाबी की ओर कदम बढ़ा सकते हैं। जानिए अपनी रुचि के क्षेत्र में पैशन होना क्यों है जरूरी है...

अपना लक्ष्य निर्धारित करके उसे पैशन बनाकर आगे बढ़ने वाले कभी भी भटकाव या दुविधा के शिकार नहीं होते। दरअसल, अपनी रुचि के क्षेत्र में पूरी तरह डूबकर ही वे अपनी मंजिल को आसान बना पाते हैं। जो दूसरों को देखकर उनकी राह का अनुकरण करने का प्रयास करते हैं, वे अपने भीतर छिपे गुणों को देख नहीं पाते। यही कारण है कि वे अपने मन की राह पर चलने की बजाय भटकाव के चौराहे पर पहुंच जाते हैं। जहां पहुंच कर उन्हें यह सूझता ही नहीं कि अब किस राह पर वे आगे बढ़ें।

दूसरों की तरफ देखने की बजाय सबसे पहले तो आप यह देखें कि आपको क्या अच्छा लगता है, आपकी रुचियां किस तरह की हैं, किस तरह के काम करने में आपको मजा आता है और क्या करना अच्छा नहीं लगता? इस प्रक्रिया में आपको अपनी रुचि का क्षेत्र जानने-समझने में सहायता मिल सकती है। एक बार अपने मन का क्षेत्र चुन लेने के बाद आप उस पर कदम आगे बढ़ाएं। इसके लिए जरूरी कोर्स करें या ट्रेनिंग हासिल करें। थ्योरी के साथ-साथ प्रैक्टिकल पर भी जोर दें। सिर्फ किताबी बातों की बजाय आज के समय की व्यावहारिक बातों और इंडस्ट्री में प्रचलित तकनीकों को जानें-समझें।

जो कुछ भी सीखें, उसमें पूरी तरह डूबें। लापरवाही या आधे-अधूरे मन से आप कभी कुछ नहीं सीख सकते। अगर अपने को परफेक्ट बनाना चाहते हैं, तो सीखने में जी-जान लगा दें। इसके बाद आप खुद देखेंगे कि कोई चीज सीख लेने के बाद आपका कॉन्फिडेंस कितना बढ़ता है। इस तरह से आगे बढ़ने पर आपको कभी काम नहीं ढूंढ़ना पड़ेगा, बल्कि इसके उलट काम आपके पीछे-पीछे चलेगा। हुनर के पारखी लोग आपको बुलाकर नौकरी देंगे।